

आयुष क्षेत्रीय समीक्षा बैठक

चर्चा में क्यों?

केन्द्रीय आयुष और पत्तन, पोत परविहन तथा जलमार्ग मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल ने बहिर के पटना में आयुष मंत्रालय द्वारा आयोजित छह राज्यों बहिर, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश, ओडिशा एवं उत्तर प्रदेश की क्षेत्रीय समीक्षा बैठक के दौरान वैश्विक स्तर पर समग्र स्वास्थ्य देखभाल के महत्त्व पर जोर दिया।

मुख्य बडि:

- आयुष मंत्रालय राष्ट्रीय आयुष मशिन (NAM) की केंद्र प्रायोजति योजना के तहत अपने संबंधित राज्य वार्षिक कार्य योजनाओं (एसएपी) के माध्यम से उनके द्वारा प्रस्तावित विभिन्न गतिविधियों के कार्यान्वयन के लिये राज्य/केंद्रशासित प्रदेश सरकारों के प्रयासों में सहयोग कर रहा है।
 - NAM को ज़रूरतमंद जनता को सूचित विकल्प प्रदान करने के लिये आयुष स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं को मज़बूत और बेहतर बनाकर पूरे देश में आयुष स्वास्थ्य देखभाल सेवाएँ प्रदान करने की कल्पना तथा उद्देश्यों के साथ कार्यान्वयित किया जा रहा है।
- आयुष मंत्रालय ने NAM के तहत सात राज्यों-बहिर, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश, ओडिशा, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल को 712.54 करोड़ रुपए आवंटित किये हैं।
 - इसने 58 एकीकृत आयुष अस्पतालों की स्थापना का भी समर्थन किया, जिनमें से 14 पहले से ही चालू हैं।
 - नयोजित 12,500 आयुष स्वास्थ्य और कल्याण केंद्रों (AHWCs) में से 4235 को समर्थन दिया गया है, इन राज्यों में 3439 पहले से ही कार्यरत हैं।
- राज्यों से आयुष शक्तिषण संस्थानों के नरिमाण कार्य में जल्द-से-जल्द तेज़ी लाने और इसे करियाशील बनाने का आग्रह किया।
- राज्यों से स्वास्थ्य के समग्र दृष्टिकोण के लिए समुदाय को विभिन्न आयुष वस्तुएँ प्रदान करने के लिये NAM दशिा-नरिदेशों में शामिल आयुष सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों को लागू करने पर जोर देने की भी अपील की।
- राज्य सरकारों, वशिष रूप से बहिर, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ से भी अनुरोध किया गया है कि वे संभावित क्षेत्रों में व्यापक आधार प्लमिफैटिक फाइलेरियासिस के रुणता प्रबंधन और दवियांगता रोकथाम (MMDP) के लिये आयुष पर राष्ट्रीय कार्यक्रम शुरू करें।

राष्ट्रीय आयुष मशिन (NAM)

- इस मशिन को सतिंबर 2014 में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत आयुष विभाग द्वारा 12वीं योजना के दौरान राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के माध्यम से कार्यान्वयन के लिये शुरू किया गया था।
 - वर्तमान में इसे आयुष मंत्रालय द्वारा लागू किया गया है।
- इस योजना में भारतीयों के समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिये आयुष क्षेत्र का वसितार शामिल है।
- यह मशिन देश में वशिष रूप से कमज़ोर और दूर-दराज़ के क्षेत्रों में आयुष स्वास्थ्य सेवाएँ/शक्तिषा प्रदान करने के लिये राज्य/केंद्रशासित प्रदेशों की सरकारों के प्रयासों का समर्थन कर स्वास्थ्य सेवाओं में अंतराल को संबोधित करता है।

हाथीपाँव (Lymphatic Filariasis)

- हाथीपाँव, जिसे आमतौर पर एलफैंटियासिस (Elephantiasis) के रूप में जाना जाता है एक [उपेक्षित उष्णकटिबंधीय रोग](#) (Neglected Tropical Disease- NTD) के रूप में माना जाता है। मानसिक स्वास्थ्य के बाद यह दूसरी सबसे अधिक अक्षम करने वाली बीमारी है।
- यह लसीका प्रणाली को नुकसान पहुँचा सकता है और शरीर के अंगों के असामान्य वसितार को जन्म दे सकता है, जिसे दरद, गंभीर विकलांगता तथा सामाजिक कलंक की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।
 - लसीका तंत्र वाहिकाओं और वशिष ऊतकों का एक नेटवर्क है जो समग्र द्रव संतुलन, अंगों एवं अंगों के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिये आवश्यक है तथा महत्त्वपूर्ण रूप से शरीर की प्रतिक्रिया रक्षा प्रणाली का एक प्रमुख घटक है।
- हाथीपाँव एक वेक्टर जनित रोग है, जो फाइलेरियोइडिया (Filarioidea) कुल के **नेमाटोड (राउडवॉर्म)** के रूप में वर्गीकृत परजीवियों के संक्रमण के कारण होता है। हाथीपाँव रोग का कारण धागेनुमा आकार के नमिनलखिति तीन प्रकार के फाइलेरियल परजीवी होते हैं-
 - **वुचेरिया बैंक्रोफ्टी** (Wuchereria Bancrofti) हाथीपाँव के लगभग 90% मामलों के लिये उत्तरदायी होता है।
 - **ब्रुगिया मलाई** (Brugia Malayi) अधिकाँश मामलों के लिये उत्तरदायी है।
 - **ब्रुगिया तिमोरी** (Brugija Timori) भी इस रोग का कारण है।

औषधीय उपचार:

- **वशिव स्वास्थ्य संगठन (WHO)** हाथीपाँव के वैश्विक उन्मूलन में तेज़ी लाने के लिये तीन औषधीय उपचारों की सफ़ारिश करता है।
 - उपचार, जिसे आईडीए (IDA) के रूप में जाना जाता है, में आइवरमेक्टिन (Ivermectin), डायथाइलकार्बामाज़िनि साइट्रेट (Diethylcarbamazine Citrate) और एल्बेंडाज़ोल (Albendazole) का संयोजन शामिल है।
 - इन औषधियों को लगातार दो वर्षों तक दिया जाता है। वयस्क कृमिका जीवनकाल लगभग चार वर्षों का होता है, इसलिये वह व्यक्तिको कोई नुकसान पहुँचाए बना स्वाभाविक रूप से मर जाता है।

भारतीय परदृश्य:

- हाथीपाँव भारत के लिये गंभीर खतरा है। 21 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में अनुमानित 650 मिलियन भारतीयों को हाथीपाँव होने का खतरा है।
- विश्व में हाथीपाँव के 40% से अधिक मामले भारत में पाए जाते हैं।
- हाथीपाँव रोग के उन्मूलन की प्रतबिद्धता को ध्यान में रखते हुए सरकार ने वर्ष 2018 में 'हाथीपाँव रोग के तीव्र उन्मूलन की कार्य-योजना' (Accelerated Plan for Elimination of Lymphatic Filariasis- APELF) नामक पहल शुरू की थी।
- भारत ने इस रोग के उन्मूलन के लिये दोहरी रणनीति अपनाई है। इसके तहत हाथीपाँव नरोधक दो दवाओं (ईडीसी तथा एल्बेंडाज़ोल- EDC and Albendazole) का प्रयोग, अंग विकृति प्रबंधन (Morbidty Management) और दवियांगता रोकथाम शामिल है।
- केंद्र सरकार दसिंबर 2019 से **द्रपिल ड्रग थेरेपी** (Triple Drug Therapy) को चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ाने के लिये प्रयासरत है।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/ayush-regional-review-meeting>

